



निमाड क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

ऋतु चौबे

शोधार्थी, शिक्षा संकाय, बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल

डॉ. हेमंत खंडाई

प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष,

सतत् शिक्षा विभाग, बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रस्तुत शोधपत्र में म.प्र. राज्य के निमाड क्षेत्र के खंडवा जिले में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया है। न्यादर्श के रूप में 100 महिला शिक्षकों (50 शहरी एवं 50 ग्रामीण) का चयन कर उन पर डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा की 'शिक्षण प्रभावशीलता मापनी' का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण प्रभावशीलता के शैक्षणिक, व्यावसायिक, सामाजिक एवं नैतिक घटकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया परंतु संवेगात्मक एवं व्यक्तित्व घटकों में सार्थक अंतर पाया गया।

शिक्षा पद्धति की कुशलता शिक्षकों की योग्यता पर निर्भर है, अच्छे शिक्षकों के अभाव में सर्वोत्तम शिक्षा पद्धति का भी असफल होना अवश्यम्भावी है, अच्छे शिक्षकों द्वारा शिक्षा पद्धति के दोषों को भी अधिकांशतः दूर किया जा सकता है।

शिक्षा वह प्रक्रिया है जो मनुष्य के जीवन को भली प्रकार से परिष्कृत कर उसे सार्थक बनाने में अपना विशेष योगदान देती है। शिक्षा के माध्यम से ही मानव अपने पशुत्व को छोड़कर मनुष्य बनने की ओर अग्रसर होता है, अतः देश में ऐसी शिक्षा व्यवस्था होनी चाहिए जो मानव का उत्थान कर सके। इस बारे में ओटाव ने कहा है— "शिक्षा का एक कार्य यह भी है कि वह समाज के सांस्कृतिक मूल्यों और व्यवहार के प्रतिमानों को अपने तरुण और सक्षम सदस्यों को प्रदान करे।"

शिक्षा प्रणाली में अध्यापक का अमूल्य योगदान होता है, ऐसा कहा गया है कि 'बिन गुरु होय ना ज्ञान'। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार वास्तविक शिक्षक वह है जो छात्रों के स्तर पर आकर उन्हें समझने का प्रयास करता है और अपनी आत्मा का उनमें स्थानांतरण करता है, आज का शिक्षक अपने छात्र से जुड़ ही नहीं पाता इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि वह छात्र के अंदर निहित कमियों को पहचानने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाता और मात्र औपचारिक तौर पर शिक्षण कार्य को अंजाम देता है। इसी को स्पष्ट करते हुए रेयन्स (1970) ने कहा है – "शिक्षक उसी सीमा तक प्रभावशाली है, जिस सीमा तक शिक्षक की क्रियाएं

छात्रों के आधारभूत कौशल, अवधारणा, कार्य करने की आदत, वांछित अभिवृत्ति, मूल्य निर्णय तथा पर्याप्त व्यक्तिगत समायोजन पैदा करने के लिये अनुकूल है।”

शिक्षा की प्रभावशीलता से संबंधित प्रत्येक पक्ष का संबंध शिक्षक की प्रभावशीलता से होता है। जब तक शिक्षक की प्रभावशीलता में वृद्धि नहो होगी तब तक शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सरल एवं बोधगम्य नही बनाया जा सकता। शिक्षक का महत्व समाज तथा शिक्षा पद्धति दोनों में ही स्पष्ट है। अतः यह कहा जा सकता है कि मानव समाज एवं देश की उन्नति उत्तम शिक्षकों पर ही निर्भर है। अतः उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन करना बहुत ही सामयिक प्रतीत हो रहा है। अतः शोधकर्ता ने निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन विषय का चयन शोधकार्य हेतु किया है।

शिक्षक प्रभावशीलता से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोधकार्य हुये है। भसीन, चंचल (1988) ने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी तथा ग्रामीण, शासकीय व अशासकीय तथा पुरुष व महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा शिक्षण अभिक्षमता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। दोषी, प्रवीण (2004) ने अपने अध्ययन में पाया कि पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता महिला शिक्षकों से अधिक पाई गई। अतः उपरोक्त शोधकार्यों से ही इस शोधकार्य को करने की प्रेरणा प्राप्त हुई। खातून, सालेहा (2011) ने अपने अध्ययन में पाया कि अध्यापक शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में लिंग के आधार पर कोई अंतर नहीं पाया गया। शुक्ला, हरगोविन्द (2013) ने अपने अध्ययन में पाया कि शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र तथा शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

उद्देश्य

1. निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न घटकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं है।
2. निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न घटकों में सार्थक अंतर नहीं है।

उपकरण

शिक्षक प्रभावशीलता मापनी – डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी.एन. मुथा

विधि

सर्वप्रथम निमाड़ क्षेत्र के खंडवा जिले में स्थित माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत 100 महिला शिक्षकों (50 शहरी एवं 50 ग्रामीण) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर डॉ. प्रमोद कुमार एवं डी. एन. मुथा की 'शिक्षक प्रभावशीलता मापनी' का प्रशासन किया गया तथा इस मापनी में दिये गये सभी घटकों का अलग-अलग फलांकन किया गया। प्राप्तों के आधार पर मास्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

तालिका क्रमांक 01

निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता संबंधी तुलनात्मक परिणाम

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
शहरी महिला शिक्षक	50	266.08	22.37	0.18	0.05 स्तर पर
ग्रामीण महिला शिक्षक	50	266.82	18.08		असार्थक

स्वतंत्रता के अंश – 98

0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 1.98

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि प्राप्त क्रांतिक अनुपात का मान 0.18 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 से कम है।

अतः इन परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

तालिका क्रमांक 02

निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के विभिन्न घटकों संबंधी तुलनात्मक परिणाम

शिक्षण प्रभावशीलता के घटक	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता
शैक्षणिक	शहरी महिला शिक्षक	50	56.78	10.68	1.78	0.05 स्तर पर असार्थक
	ग्रामीण महिला शिक्षक	50	53.44	7.95		
व्यावसायिक	शहरी महिला शिक्षक	50	46.52	7.37	1.05	0.05 स्तर पर असार्थक
	ग्रामीण महिला शिक्षक	50	48.04	7.12		
सामाजिक	शहरी महिला शिक्षक	50	43.20	6.91	0.38	0.05 स्तर पर असार्थक
	ग्रामीण महिला शिक्षक	50	43.76	7.65		
संवेगात्मक	शहरी महिला शिक्षक	50	32.14	6.25	4.24	0.01 स्तर पर सार्थक
	ग्रामीण महिला शिक्षक	50	38.16	7.83		
नैतिक	शहरी महिला शिक्षक	50	40.52	5.51	0.93	0.05 स्तर पर असार्थक
	ग्रामीण महिला शिक्षक	50	39.50	5.42		
व्यक्तित्व	शहरी महिला शिक्षक	50	46.92	6.41	2.34	0.05 स्तर पर सार्थक
	ग्रामीण महिला शिक्षक	50	43.92	6.39		

स्वतंत्रता के अंश – 98

0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 1.98

0.01 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान – 2.63

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता के शैक्षणिक, व्यावसायिक, सामाजिक एवं नैतिक घटकों में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि इन घटकों के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 1.78, 1.05, 0.38, 0.93 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.98 से कम हैं जबकि संवेगात्मक एवं व्यक्तित्व घटकों में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इन घटकों के लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 4.24, 2.34 स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता के 0.01, 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 2.63, 1.98 से अधिक हैं।

अतः इन परिणामों के आधार पर कहा जा सकता है कि निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता के शैक्षणिक, व्यावसायिक, सामाजिक एवं नैतिक घटकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया परंतु संवेगात्मक एवं व्यक्तित्व घटकों में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों में संवेगात्मक घटक, शहरी क्षेत्र की महिला शिक्षकों की तुलना में उच्च पाया गया जबकि शहरी क्षेत्र की महिला शिक्षकों में व्यक्तित्व घटक शिक्षकों ग्रामीण क्षेत्र की महिला की तुलना में उच्च पाया गया।

निष्कर्ष

1. निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
2. निमाड़ क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों के मध्य शिक्षण प्रभावशीलता के शैक्षणिक, व्यावसायिक, सामाजिक एवं नैतिक घटकों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया परंतु संवेगात्मक एवं व्यक्तित्व घटकों में सार्थक अंतर पाया गया तथा ग्रामीण क्षेत्र की महिला शिक्षकों में संवेगात्मक घटक, शहरी क्षेत्र की महिला शिक्षकों की तुलना में उच्च पाया गया जबकि शहरी क्षेत्र की महिला शिक्षकों में व्यक्तित्व घटक शिक्षकों ग्रामीण क्षेत्र की महिला की तुलना में उच्च पाया गया।

// संदर्भ ग्रंथ सूची //

- 1- अग्रवाल, जे.सी (1972) विद्यालय प्रशासन, आर्य बुक डिपो, करोलबाग, नई दिल्ली
- 2- भाई, योगेन्द्रजीत (1974) शैक्षिक एवं विद्यालय प्रशासन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- 3- भारद्वाज, दिनेशचंद्र (नवीन संस्करण) विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- 4- चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद (1958) जनतन्त्रात्मक विद्यालय संगठन, भारत पब्लिकेशन आगरा
- 5- प्रसाद, केशव (नवीन संस्करण) विद्यालय व्यवस्था, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
- 6- शर्मा, आर.ए. (1995) शिक्षा अनुसंधान, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ
- 7- शर्मा, आर.ए. (2001) विद्यालय संगठन तथा शिक्षा प्रशासन, आर. लाल बुक डिपो मेरठ

Journals

- 1- Bhasin, Chanchal. (1988) Teaching aptitude and its relationship with reaching effectiveness of the higher secondary school teachers in relation to the modern community. Ph.D. , Edu, Rani Durgavati Univ., in Fifth Survey of Educational Resarch, Vol – 2, Pg. No. 1437-38
- 2- Khatoon, Saliha (2011) Emotional intelligence effective teaching of D. ED & B. ED level school teachers. The CTE National Journal, Vol. IX, No. 1, Jan.-June 2011, Page No, 64-68
- 3- दोषी, प्रवीण (2004) "प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षणप्रभावशीलता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन", प्राइमरी शिक्षा, अप्रैल 2004, पेज 25 से 33
- 4- शुक्ला, हरगोविन्द (2013) "हाईस्कूल के विद्यार्थियों की गणित विषय में शैक्षणिक उपलब्धि पर बुद्धि, पारिवारिक एवं विद्यालयीन वातावरण तथा शिक्षण प्रभावशीलता के प्रभाव का अध्ययन", अप्रकाशित शोध प्रबंध, म.प्र. भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय, भोपाल